वैल्हम स्कूल पत्रिका

१९७२ हिन्दी भाग नं० ३१

मेरी जीवन की विश्वमणीय घटना

मैं मशकश के राजा का सबसे विश्वसनीय मन्त्री था। वह मुझे सबसे ज्यादा बुद्धिमान समझते थे इसलिये वह जहाँ पर भी जाते थे, सलाह लेने के लिए, मुझे साथ ले जाते थे। इसी कारण दूसरे मन्त्री मुझसे ईर्ष्या करते थे।

एक बार राजा, भारत में श्रीमती इन्द्रिरा गाँधी से मिलने गये। मैं भी उनके साथ था। लौटते समय पाँच-छः मशकश हवाई-जहाज, राजा के स्वागत के लिये आये। तभी धाँय ! धाँय ! की आवाज़ सुनाई दी और एक गोली हमारे जहाज पर आकर लगी। पहले तो हमें पता नहीं चला कि वह आवाज़ कहाँ से आई है। हमने सोचा कि जहाज में कुछ गड़बड़ हो गई है, पर शीघ्र ही एक गोली वायुयान-चालक को लगी। वह अचेत होकर गिर पड़ा।

आकाश धाँय ! धाँय ! से गूँज उठा। हमने सोचा कि वह दुश्मन के हवाई-जहाज होंगे पर जब मुड़ कर देखा तो उन पर हमारे ही देश के निशान थे गोलियों की आवाज़ के अतिरिक्त और कुछ न सुनाई दे रहा था। हमारे कुछ समझ में नहीं आया कि हम पर गोलियों की वर्षा क्यों हो रही है। सब ओर धुंआ ही धुंआ होने के कारण मार्ग साफ न दिखलाई दे रहा था। प्रकृति काँप उठी। बड़ा ही विकट समय था !

मैं शीघ्र ही समझ गया कि यह राजा को मारने का प्रयत्न है। वायुयान-चालक के मर जाने के कारण मैंने जहाज चलाना शुरु किया। राजा घबरा गये पर मैंने साहस न छोड़ा। मुझे जहाज़ अच्छी तरह चलाना नहीं आता था इसलिये वह झटका खा रहा था। जब वह कभी नीचे हो जाता

तो मैं उसे बड़ी कठिनाई से सही मार्ग पर लाता। मैं अपने परम्-प्रिय राजा को कभी कठिनाई में न देख सकता था इसलिये उनको बचाने का जी तोड़ प्रयत्न कर रहा था। मैं पसीनों में लथ-पथ हो गया। मेरी टाँगे काँप रही थीं और दिल धड़क रहा था।

यकायक मुझे एक उपाय सूझा। मैंने बेतार का तार उठा लिया और जो लोग दूसरे जहाज़ पर थे, उनसे बातें करने लगा। मैं आवाज़ बदल कर उनसे कहने लगा, "राजा घायल हो गया है और शीघ्र ही मरने वाला है। अब सिर्फ मैं ही बचा हूँ। मुझ जैसे गरीब आदमी पर दया कीजिये और मेरी जान न लिजिये।" उन्होंने मेरी झूठी बातों में आकर, गोलियाँ बरसानी बन्द करदीं और वापिस लौट गये।

दूसरे जहाज़ के चले जाने के पश्चात, मैंने अपना जहाज़ मशकश के पास ही एक गाँव में उतार लिया। जहाज़ पर इतनी गोलियाँ लगी थीं कि पैट्रोल की टंकी चू रही थी और जगह-जगह पर गोलियों के निशान पड़ गये थे। जब हमने वहाँ के लोगों को अपनी स्थिति समझाई, तो उन्हें हमारी सहायता करने में बहुत प्रसन्नता हुई। हम वहाँ से मशकश आ गये। मशकश पहुंचने पर, राजा बहुत शान से जिन लोगों ने हम पर आक्रमण करा था, उनसे ऐसे मिले मानो कुछ हुआ ही न हो। मेरी टाँगे अब भी काँप रही थीं और मैं बैठना चाहता था पर फिर भी मैं राजा के पीछे बहुत अकड़ कर चलता रहा। मुझे राजा के प्राणों की रक्षा करके बहुत खुशी हो रही थी!

राजा मेरी वीरता पर बहुत प्रसन्न हुए और इसके फलस्वरूप मुझ पर पहले से भी अधिक विश्वास करने लगे।

इसलिये ठीक ही कहते हैं कि साहस नहीं छोड़ना चाहिये। जो मनुष्य साहस से काम लेता है, सफलता उसके कदम चूमती है।

सन्दीप अग्रवाल
आयु ११ वर्ष

———

३

श्री लाल बहादुर शास्त्री

परमार्थ तन जिसने दिया,
जो दूसरों के हित जिया,
दे शान्ति चिर उसको जगत परमात्मा,
इस विश्व संकट में सदा,
मार्ग दर्शनी हो सर्वदा,
ज्योतिर्मयी 'शास्त्री' तुम्हारी आत्मा।

कौन भारतवासी लाल बहादुर शास्त्री को नही जानता ? आपका जन्म दो अक्टूबर उन्नीस सौ चार को बनारस जिले के मुगलसराय नामक स्थान में हुआ था। इनकी माता का नाम रामदुलारी देवी और पिता का नाम शारदा प्रसाद सक्सैना था। इनका बचपन अत्यन्त गरीबी में व्यतीत हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के प्राइमरी स्कूल मे हुई। इसके बाद वह बनारस के 'हरिश्चन्द्र' हाई स्कूल में प्रविष्ट हुए। साधनों के अभाव में वह नित्य प्रतिदिन पैदल ही विद्यालय जाते थे। अनेक बार इन्होंने गरीब होने के कारण भूखे ही दिन बिताए। गरीब होते हुए भी वह तीव्र बुद्धि वाले थे और गुरुजन इन पर स्नेह रखते थे।

जब लाल बहादुर सोलह वर्ष के थे तभी असहयोग आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ। शास्त्री जी अपनी हाई स्कूल की परीक्षा छोड़ कर इस आन्दोलन में सम्मिलित हो गये। इन्होने अनेक बार जेल यात्रा की और नौ वर्ष तक विभिन्न जेलों में रहे। जेल में भी अध्ययन के अनुराग को नहीं छोड़ा। पुनः अवसर मिलने पर उन्होंने काशी विद्या पीठ से शास्त्री परीक्षा पास की। वहीं पर इन्होंने भारतीय संस्कृति तथा दर्शन का गम्भीर अध्ययन किया।

१९२६ ई० में यह लोक सेवक मंडल के आजीवन सदस्य हुए। १९२८ में इनका विवाह श्रीमती ललिता देवी से हुआ।

आजादी मिलने के बाद १९४७ में उत्तर प्रदेश में श्री गोविन्द बल्लभ पंत के मुख्य मन्त्री होने के समय उन्होंने सभा-सचिव का पद प्राप्त किया। इनकी योग्यता देखकर इन्हें परिवहन तथा गृह मन्त्री बनाया गया। १९५२

में इन्होंने केन्द्रिय शासन में प्रवेश किया और केन्द्रीय मन्त्री मंडल में रेल व परिवहन विभाग के मंत्री हुए। इसके बाद क्रमशः संचार, वाणिज्य, उद्योग, गृह तथा बिना विभाग के मंत्री हुए।

पंडित जवाहर लाल के निधन के पश्चात् ९ जून १९६४ को यह भारत के प्रधान मंत्री बने। लगभग अट्ठारह मास तक इन्होंने हमारे देश पर कुशल प्रशासन किया। दुर्भाग्यवश भारत तथा पाकिस्तान की संधि के अवसर पर ताशकन्द में, दिल की बीमारी से आपका आक्समिक निधन हो गया।

शास्त्री सच्चे देश-भक्त, कुशल मार्ग दर्शक, विनम्र, शान्त स्वभाव वाले और महान् व्यक्तित्व वाले थे। इन्हीं के शासन काल में भारत और पकिस्तान के बीच युद्ध हुआ। उसमें इन्होंने अपनी दृढ़ता का परिचय देकर तथा विजय पाकर देश वासियों के हृदयों में स्थान प्राप्त किया। हमें भी इनकी तरह देश की सेवा करनी चाहिए और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

विवेक गर्ग
कक्षा पी० सी० ई०
आयु ११ वर्ष

मेरी विदेशी--यात्रा

इन छुट्टीयों में मैं विदेश गया था। इस बार हम सब 'इटली' घूमने गए थे।

हम सुबह पाँच बजे हवाई जहाज द्वारा रोम की ओर चले। लगभग सात-आठ घन्टे की सुखद यात्रा के बाद हम रोम पहुँचे। रोम एक सुन्दर नगर है। यहाँ की सड़कों पर बड़ी भीड़ रहती है। वहाँ हम 'ओपेरा हाऊस' में गए। वहाँ हमने नए प्रकार का संगीत सुना।

अगले दिन हम रोम का प्रसिद्ध 'सेन्ट पीटर्स' गिरजाघर देखने गये वह बहुत विशाल है। उसमें ईसा की अनेकों मूर्तियाँ है। उसकी छत पर

चित्रकारी हो रही है। इसी गिरजाघर के पीछे वैटिकन में 'पोप पौल' भी रहते हैं। यहाँ देश-विदेश से यात्री इस भव्य गिरजे को देखने आते हैं।

शाम को हम 'फाउन्टे आँफ लेवि' देखने गये। यह एक बहुत ही सुन्दर फव्वारा हैं। वहाँ हमने फव्वारे की तरफ पीठ करके वर माँगते हुए सिक्का फेंका। कहते हैं कि वहाँ पर माँगा हुआ वर अवश्य पूरा होता है। वर पूरा होने पर दुबारा वहाँ की यात्रा करनी पड़ती है।

रोम में और भी अनेक प्राचीन विशाल भवन हैं। 'वहाँ विक्टर इमैन्यूल' का 'मोन्यूमेन्ट' बहुत ही सुन्दर है। यह पूरा भवन सफेद संगमरमर का बना हुआ है। रोम में जगह-जगह अनेक प्राचीन विशाल मूर्तियाँ हैं।

अगले दिन हम 'वैनिस' गए। यह नहरों और नावों का शहर है। यहाँ की हर गली एक छोटी सी नदी हैं। यहाँ मोटरें आदि नहीं होतीं यहाँ पर सभी व्यापार, काम-काज आदि नावों पर होता है। यहाँ की नावें 'गौंडेलू' कहलाती हैं। इर सुन्दर नगर को देखकर तो मैं चकित रह गया।

इटली के लोग मुझे बहुत सुन्दर और अच्छे लगे। वहाँ के फल बड़े ही रसीले और स्वादिष्ट होते हैं। वहाँ के 'रेस्टोरॉं' की स्पेग्हटी' बड़ी स्वादिष्ट होती है।

इस प्रकार इटली की सुन्दर यात्रा कर के हम अपने देश लौट आए।

दीपिन्दर (३८८)
आयु १० वर्ष

सालारजंग संग्रहालय

भारत में अनेक देखने योग्य चीजें हैं। उनमें से एक सालारजंग अजायबघर है। इस अजायबघर की अधिकतर वस्तुएँ, पहले हैदराबाद के निज़ाम सालारजंग की निजी सम्पत्ति थीं। सालारजंग को तरह-तरह की वस्तुएँ एकत्रित करने का शौक था। उन्होंने कालीन, प्याले, सजावट की चीजें, जानवरों की खालें, घड़ियाँ, सुन्दर-सुन्दर मूर्तियाँ तथा बहुमूल्य पत्थर अपने निजी संग्रहालय में एकत्रित किये थे। उनकी मृत्यु के बाद यह देश की सम्पति हो गया।

सालारजंग संग्रहालय में टिकट खरीदने के बाद हमने पहले कमरे में प्रवेश किया। उस कमरे में काष्ठ की बनी हुई अनेक सुन्दर सजावट की वस्तुएँ थीं। वे इतनी निपुणता से बनी थीं कि हमारी आँखें खुली की खुली रह गयीं। अवश्य ही किन्हीं चतुर शिल्पियों ने उन्हें आकार दिया होगा।

जब हमने दूसरे कमरे में प्रवेश कियां तो बढ़िया से बढ़िया कालीन दिखाई दिये। वे अत्यन्त मूल्यवान थे तथा ईरान, काबुल, आदि अनेक देशों से मँगाये गये थे। इनमें से एक कालीन बहुत ही नर्म और सुन्दर था। इसका रंग गुलाबी था और आकार फूल के समान था।

एक अन्य कमरे में बच्चों के योग्य खेलने अनेक खिलौने थे। वहाँ रेलवे स्टेशन, भारतीव सेना आदि के मौडल रखे थे।

एक कमरे में हाथी के दाँत की बनी हुई बहुत सुन्दर वस्तुएँ थीं। उसी के पास वाले कमरे में प्रस्तर की सुन्दर मूर्तियाँ और अनेक प्रकार के रत्न रखे थे।

वहीं पर मैंने एक अनोखी घड़ी देखी। उस घड़ी के ऊपरी सिरे पर एक लकड़ी का महल बना था। उसके भीतर से हर घंटे पर एक छोटा सा लकड़ी का आदमी निकलता था और घंटा बजाकर फिर वापस महल के भीतर चला जाता था। इसी प्रकार एक दूसरा मनुष्य मिनट का संकेत देता था।

सालारजंग संग्रहालय में देखने योग्य अनेक वस्तुएँ थीं, किन्तु हमारे पास समय कम था। इस कारण हम लौट आये। फिर कभी अवसर मिलेगा तो अवश्य जायेंगे।

राजीव भूषन
आयु १० वर्ष

मेरी काबुल की यात्रा

आठ दिसम्बर को मैं स्कूल पार्टी से दिल्ली गया। तीन-चार दिन मैं वहाँ पर रहा, उसके बाद में जहाज में चढ़ा। फिर मैं काबुल की तरफ उड़ा। काबुल पहुँच कर मैंने सबको नमस्ते की। घर जाकर मैंने अपने कुत्ते को देखा। उसे देखकर मुझे प्रसन्नता हुई। फिर एक दिन पिताजी मुझे चिड़िया-घर ले गये। उधर मैंने शेर, बन्दर लंगूर, ओस्ट्रीरच, हाथी और साँप तथा और भी जानवर देखे। फिर मैंने भोजन खाया। दूसरे दिन मैं दोस्त के घर गया। वहाँ मैं सारे दिन खेला। काबुल में सड़कें बहुत गन्दी रहती हैं, पर घर बहुत सुन्दर होते हैं। वहाँ पर दूकानें बहुत बड़ी होती हैं। सबसे बड़ी दुकान का नाम है, हमीत ज्यादा। ऊपर सारे खिलौने होते हैं और नीचे कपड़े।क ाबुल में पेड़ भी ऊँचे-ऊँचे होते हैं। वहाँ सब पर अफ़गान लोग रहते हैं। उनकी बोली हमसे बहुत फ़रक होती है। चौदह जनवरी को में वापिस आया। उधर से मैं देहरादून आकर बहुत प्रसन्न हुआ।

अजय साहनी
आयु ८ वर्ष

रक्षा-बन्धन

भारत में अनेक त्योहार मनाए जाते हैं, पर उनमें से रक्षा बन्धन एक मधुर त्योहार है। इसे श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाते हैं। यह

त्योहार भाई-बहन के पवित्र प्यार का पर्व है। महाराष्ट्र में इसे नारियल पूर्णिमा कहते हैं। त्योहार के दिन वे सागर में नारियल की भेंट चढ़ाते हैं।

रक्षा-बन्धन से दो-चार दिन पहले ही दुकानें सुन्दर सुनहरी राखियों से सज जाती हैं। त्योहार के दिन सुबह घरों में पूजा होती है, फिर बहन भाई को टीका लगाती है और राखी बाँधती है। भाई उसको कुछ रुपये देता है। राखी का मतलब रक्षा का धागा होता है। बहन राखी बाँधने के बाद भाई की रक्षा की मंगल कामना करती है। भाई बहन की हर संकट से रक्षा करने का वचन देता है।

इसकी एक ऐतिहासिक गाथा है। एक बार चित्तौड़ की रानी कर्णावती पर एक राजा ने हमला किया था। कर्णावती ने हुँमायुँ को भाई मान के राखी भेजी। हुँमायुँ समझ गया कि वह उसको भाई मान रही है। उसने कर्णावती की रक्षा की और राखी का मान रखा।

हम सभी भाई इस दिन बहनों की सुन्दर राखियों की प्रतीक्षा करते हैं। यह पर्व मुझे अति प्रिय है।

नीरज किचलू (न० २१०)
आयु ९ वर्ष

मेरी गर्मियों की छुट्टियाँ

मैं अपनी छुट्टियों में दिल्ली गया था। मेरी दादी और चाचीजी वहाँ रहते हैं। कभी-कभी मेरी माँ और पिताजी भी आ जाते हैं वहाँ मुझे बहुत मज़ा आता है हम सब दोस्त वहाँ मिलकर खेलते हैं। वहाँ बहुत तरह की चीजें मिलती हैं। कभी हम सब मिलकर पतंग उड़ाते हैं। और दूसरों की पतंग को काटते हैं।

कभी हम सब मिलकर पटाखे उड़ाते हैं। वहाँ मैं अपने माता-पिता के साथ घूमने जाता था। वहाँ मेरे चाचीजी ने एक मन्दिर बनवाया है। सब उसमें बैठकर पूजा करते हैं। मुझे छुट्टियों में बड़ा आनन्द आया।

अश्वनी
आयु ८½ वर्ष

वास्तविकता और कल्पना

तैराकी एक बहुत अच्छी अभिरुचि है। संसार के लगभग सभी लोग इसे पसन्द करते हैं तैरना सीखने से कई लाभ है। आजकल विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालयों में भी तैरने के कुण्ड बन गये हैं। नदी के तेज बहाव में तैरना कठिन कार्य है।

रविवार का दिन था और सूर्य काफी ऊँचा हो गया था। हमने तैरने का निश्चय किया। हम कार में रिसपना नदी के लिए रवाना हुये। नदी के किनारे कार से उतर कर हमने तैरने के कपड़े पहन लिए।

मैं शीघ्र ही नदी के छिछले भाग में कूदा। कुछ समय तैरने तथा पानी से खेलने के पश्चात् हम ने कुछ खाया और नदी के किनारे बैठ गये।

कुछ समय बैठने के बाद हमारा मन गहरे पानी में जाने को हुआ। मैं और मेरा भाई गहरे पानी में कूदने के लिए भागे। मेरे भाई का पैर फिसल गया और वह वहीं गिर गया। मैं बहुत ही गहरे पानी में जा गिरा।

मैं बड़ी कठिनाई से उठा और वापिस आ ही रहा था कि एक बड़ी लहर आई और मेरे पैर जमीन से उखड़ गये। और मैं अपने मुँह के भार से गिरा। मैं बहने लगा। मेरे पिताजी ने मुझे बचाने का प्रयत्न किया। मैं हाथ हिलाने लगा और चिल्लाने लगा। साथ में तैरने का भी प्रयत्न करता रहा। भाग्य ने साथ न दिया और मैं तेज बहने लगा।

जितना मैं आगे जाता उतना ही नदी का पानी तेज होता जाता। बहुत देर हाथ हिलाने के बाद मेरे हाथ थक गये। मेरे मुँह तथा नाक से पानी पेट में जा रहा था। मेरी घबराहट और बढ़ने लगी। सामने मौत दिखाई दे रही थी। बचने का कोई उपाय नहीं था। जितना ही मैं तैरने की कोशिश करता उतना ही मैं नीचे जाता।

मेरा दम घुटने लगा। मेरी चेतना खोने लगी। कुछ समय पश्चात मैं बेहोश हो गया। मैं और तेज बहने लगा। बहते-बहते मेरा सिर एक नाव से टकराया। नाव में मेरे पिताजी बैठे थे।

उन्होंने मुझे बड़ी कठिनता से ऊपर खींचा और चिकित्सालय ले गये।

एक दिन के बाद मैं ठीक हो गया। जब मेरा छोटा भाई मुझे मिलने आया तो उसने मुझसे पूछा, "भैया, जब तुम डूबे तो क्या तुम नाग-राज के महल में गये ? क्या सचमुच राजा की बेटी बड़ी सुन्दर है ? आप वहाँ से कोई हीरे लाये ?" उसने और भी कई प्रश्न एक सांस में पूछ डाले।

मैंने उत्तर दिया, "बच्चू, वह तो सब कहानियां हैं और अगर सचमुच डूबे तो मौत के सिवाय कुछ नहीं दिखाई देता।"

जुगजीव सिंह
आयु ११ वर्ष

मेरा देश नेपाल

मेरा देश नेपाल एक छोटा सा देश है। किन्तु यही संसार भर में अकेला हिन्दू राष्ट्र है।

नेपाल भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत की गोद में बसा है। उसकी राजधानी 'काठमान्डू' है। 'काठमान्डू' तराई है। यहाँ से थोड़ी ही दूर पर चीन की सीमा है।

नेपाल के पहाड़ सदा हिम से ढके रहते हैं। संसार के उच्चतम शिखर 'एवरेस्ट' पर जाने के लिए भी नेपाल से ही जाना पड़ता है।

नेपाल में अधिकतर पथरीली ज़मीन है। कहीं-कहीं हरे-भरे खेत हैं। वहाँ पर न बैलगाड़ियाँ हैं, न बैल हल चलाते हैं। वहाँ आदमी फावड़े से खेतों को खोदते हैं। वहाँ अधिकतर चावल की खेती होती है। नेपाल के लोग बहुत परिश्रमी हैं। वे बहुत भार उठाते हैं तथा सभी जगह पैदल ही जाते हैं। वे गीत गाते हुए काम करते हैं।

नेपाल में गाय को बहुत बड़ा मानते हैं। वहाँ हर शनिवार को छुट्टी होती है। वहाँ के लोग बहुत पूजा करते हैं।

नेपाल में अनेक सुन्दर स्थान हैं। पोखरा में एक बहुत बड़ी झील है। वहाँ एक हिम शिखर है जो मछली के समान है। काठमान्डू में विशाल

पशुपतिनाथ का मन्दिर है। यहाँ हर शनिवार को बहुत बड़ी पूजा होती है। नेपाल में अधिकतर घर 'कोबोतों' या जापानी ढंग के बने हैं। नेपाल में चार-पाँच हवाई अड्डे हैं। काठमान्डू और अन्य एक दो नगरों को छोड़ कर कहीं भी मोटरें या अन्य सवारियाँ नहीं हैं। लोग पैदल या घोड़ों पर यात्रा करते हैं।

नेपाल में राजा राज्य करता है। नेपाल के राजा का महल बड़ा सुन्दर है। मेरा देश नेपाल एक सुन्दर देश है।

अनिल
आयु १० वर्ष

स्वाधीनता दिवस

इस वर्ष हमारे देश में स्वाधीनता दिवस की रजत-जयन्ती मनाई गई। आज से पच्चीस वर्ष पूर्व १९४७ में भारत को ब्रिटिश राज्य से मुक्ति प्राप्त हुई।

सारे देश में खुशी की लहर दौड़ गई। जन-जन में उत्साह व देश प्रेम की भावना उमड़ पड़ी। घर-घर में तिरंगे लहराये गये व दीपावली की गई। कोने-कोने से भारत माता की व देश के नेताओं की जय-जयकार गूँज उठी। भारत की राजधानी देहली में लाल किले पर ध्वाजारोहण किया गया। इसी प्रकार देश के समस्त सरकारी भवनों पर तिरंगा लहराया गया। देश के लिए शहीद हुए वीरों को श्रद्धांजलियाँ अर्पण की गईं।

अब भी हमारे देश में स्वतन्त्रता दिवस बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। लाल किले पर प्रधानमंत्री द्वारा ध्वजारोहण किया जाता है। प्रधानमंत्री का भाषण होता है

हमारी पाठशाला में स्वतन्त्रता दिवस बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। श्री जोशी द्वारा ध्वजारोहण के पश्चात् राष्ट्रीय गान हुआ। इस के पश्चात हमारे अध्यापक श्री उनियाल ने भाषण दिया। छोटे-छोटे बच्चों ने

देश-प्रेम के गीत गाये। अन्त में जयहिन्द के नारों से आकाश गूंज उठा।

दीपक
आयु ९ वर्ष

वायुयान की यात्रा

इन छुट्टियों में मैं वायुयान द्वारा चंडीगढ़ से दिल्ली गया। मेरी वायु-यान से यह पहली यात्रा थी।

हम मण्डी से चंडीगढ़ कार में गये। वहाँ हमने वायुयान के टिकट लिए। दूसरे दिन हम हवाई-अड्डे पर गये। वहाँ हमारा वाथुयान उड़ने को तैयार था। हम उस पर सवार हुए।

वायुयान आकाश की ओर उड़ चला। थोड़ी ही देर में वह बहुत ऊँचे उड़ गया। इतनी ऊँचाई से मैं सुन्दर-सुन्दर चीजें देख सकता था। मुझे घर, बाग और गाँव जो धरती पर छोटे से दिखाई देते थे, बड़े मनोहर लगे। धरती जल्दी से हमारे सामने से निकल जाती थी। हम आदमियों को धरती पर खेत में काम करते देख सकते थे। ऊपर से नदियाँ और पहाड़ियाँ बड़ी मनोहर लग रही थीं। लगता था कि ये सब बहुत नजदीक हैं।

थोड़ी ही देर में हम दिल्ली पहुँच गये। वहाँ हम उतर गये। यह यात्रा मुझको सभी यात्राओं से अच्छी लगी।

राजीव
आयु १० वर्ष

पहेलियाँ

ऐसी कौन सी वस्तु है जो कभी नहीं टूटती ? (परछांई)

ना चोरी की ना खून किया,
फिर उसका सिर क्यों काट दिया ? (नाखून)

जय वर्धन,
आयु १० वर्ष

* * *

काली-काली माँ लाल-लाल बच्चे ? (रेलगाड़ी)

ऊपर सारे आदमी,
नीचे एक पेड़ ? (गन्ना)

हरी थी मन भरी थी,
सवा लाख मोती जड़ी थी ।
राजा जी के बाग में,
दुशाला ओढे खड़ी थी ? (भुट्टा) (मकई)

अमित राय चौधरी,
आयु

* * *

हरा दरवाजा लाल मकान,
उसमें बैठे काले मेहमान ? (तरबूज)

दीपेन्दर सिंह,
आयु ९ वर्ष

———

एक अभूतपूर्व अनुभव

एक बार मुझे गोमिया से थोड़ी ही दूर एक गाँव, उधर पैदल जाने का शौक हुआ। पहले मेरी माँ ने मुझे आज्ञा नहीं दी। परन्तु जब मैंने बहुत विनती की तब उन्होंने मुझे अनुमति दे दी। मैं बहुत प्रसन्न हुआ और मैंने अपने छोटे से बैग में 'सैंड विचेज' और थोड़े से केले, अमरूद आदि भर लिये। फिर मैंने यात्रा शुरु की।

जब मैं जंगल के पास पहुंचा तो मैंने सोचा की यहाँ आना उचित नहीं था। किन्तु फिर मैंने सोचा की मेरे पास तो चाकू है इसलिए डरने की कोई बात नहीं। मैंने जंगल में प्रवेश किया। जंगल बहुत घना था। वहाँ घना अन्धकार था। मैंने अपनी मशाल जला ली। मुझे डर लग रहा था। इसलिए मैं एक गाना गाने लगा। मैंने इधर उधर दृष्टि दौड़ाई तो मुझे एक गुफा दिखाई दी।

मैं भीतर गया और बैठ कर खाना खाने लगा। मैं इधर-उधर देख रहा था कि अचानक मैं चौंक उठा। मेरे सामने एक शेर मेरे ऊपर छलांग मारने को तत्पर था। एक क्षण मुझे एक प्रहर जैसा लग रहा था। मैं चिल्ला उठा। शेर दो तीन कदम पीछे हट गया। मैंने अपना चाकू निकाल लिया। यह देख कर शेर और दो कदम पीछे गया किन्तु अब वह मुझ पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा था। मुझे एक तरकीब सूझी। सामने पाँच छः सूखी लकड़ियाँ पड़ी थीं। मैंने एक लकड़ी उठाई और उसमें जल्दी से आग लगा दी। फिर मैं उसे मशाल से डराने लगा। वह पीछे जाते-जाते अचानक एक छलांग मार के घने जंगल के बड़ पेड़ों के बीच गायब हो गया। मैं बहुत डर गया था। मैं जल्दी से चल दिया। लौटते समय मैंने एक चीज देखी जिसे देख कर मेरे हृदय का रक्त जम गया। यह एक भयंकर अजगर था जो तेजी से मेरी तरफ आ रहा था। उसने एक झटके से मुझे पकड़ लिया। वह मेरे चारों ओर लिपटने का प्रयत्न कर रहा था किन्तु मैंने अपनी सुध-बुध नहीं गवाँई। मैंने चाकू निकाल कर किसी तरह उसके मूंह में घुसा दिया। धीरे-धीरे वह मुझे छोड़ने लगा। और थोड़ी देर बाद में वह जमीन में मरा पड़ा हुआ था।

मैं अब तेजी से भागने लगा। भागते-भागते मैं एक पत्थर से ठोकर खाकर गिर गया। मेरे पैर से खून निकलने लगा। मैं रोने लगा। मैं उठ कर फिर भागा। जब मैं घर के निकट पहुँचा तो मेरी जान में जान आई। घर पर सभी चिन्तित थे। मुझे थोड़ी डाँट पड़ी किन्तु सभी मेरे साहस और वीरता की प्रशंसा कर रहे थे।

शंकर सेन
आयु ९ वर्ष

सर्वे आफ इंडिया का निरीक्षण

इस बार स्वतन्त्रता दिवस की रजत-जयन्ती थी इस लिए सारे सरकारी संस्थानों में प्रदर्शनी लगी थी। शनिवार को हमें पता लगा कि हम 'सर्वे आफ इंडिया' जा रहे थे। मैं बड़ा खुश हुआ।

दोपहर को ३.१५ पर बस आई। हम सब बस में बैठ कर सर्वे आफ इंडिया चले। वहाँ पहुंच कर सबसे पहले हमने एक दुनिया का नक्शा देखा। वह बहुत बड़ा था। उसके पश्चात् हमने भारत के नक्शे देखे। उनमें से एक 'थ्री-डायमेन्शनल' था। वह बहुत ही सुन्दर था।

उसके पश्चात् हमने हिमालय के नक्शे देखे। वे भी बहुत सुन्दर लग रहे थे। उनमें से भी एक 'थ्री-डायमेन्शनल' था। वह नक्शा सबसे सुन्दर लग रहा था। उसके पश्चात् हमने एक नक्शे में देखा कि भारत में कितना और क्या अनाज उगता है। हमने यह भी देखा कि भारत में कैसी नदियाँ और कैसे पहाड़ हैं।

उसके बाद हमको एक सज्जन ने दिखाया कि नक्शे कैसे बनते हैं। उन्होंने यह भी दिखाया कि जब फोटो खींचते हैं तो कैसी होती हैं।

उसके बाद हमने एक यन्त्र देखा। वह यन्त्र एक घन्टे में २५० नक्शे छापता था। वह बहुत बड़ा यन्त्र था तथा बड़े-बड़े नक्शे छापता था। उसके बाद हमने सबसे आधुनिक यन्त्र देखा जो एक घन्टे में ५०० नक्शे छापता था।

अगले कमरे में हमने पहाड़ों की फोटो खींचने वाला विशाल कैमरा देखा। एक सज्जन ने हमें उस कैमरे के बारे में सब कुछ बताया। उसके पश्चात् हमने उनको धन्यवाद दिया और वापस स्कूल लौट आए।

संजीव
आयु १० वर्ष

मेरी काश्मीर यात्रा

जुलाई में मैं काश्मीर गया था। मैं बस से काश्मीर गया था। काश्मीर एक बहुत सुन्दर जगह है। काश्मीर में मैं पहलगाँव में रहता था। काश्मीर के पहाड़ों में मैंने स्केटिंग करी थी। काश्मीर में मैंने घोड़े पर बैठ कर सैर भी की थी। काश्मीर में एक जगह है। वहाँ बहुत सारे फूल हैं। मैं वहाँ फूल देखने गया था। वहाँ के मालिक ने मुझे थोड़े से फूल भी दिये थे। मैंने काश्मीर में पहाड़ी कुत्ते भी देखे थे। उनके बाल बहुत लम्बे थे। काश्मीर में मैंने हाऊसबोट भी देखी थी। वहाँ के पहाँड़ों पर मैं चढ़ा था। काश्मीर के पहाड़ बहुत बड़े और बहुत ऊँचे हैं। काश्मीर में मैंने एक भालू देखा था। मुझे काश्मीर में सबसे अच्छी जगह पहलगाँव लगी। काश्मीर एक बहुत ठंडी और बहुत बड़ी जगह है। एक दिन मैं वहाँ घूमने जा रहा था तो बर्फ गिरने लगी। मेरे पिताजी ने पहाड़ पर गिरती हुई बर्फ की फोटो ली। वहाँ मैं बहुत गर्म कपड़े पहनता था। काश्मीर में बहुत से होटल हैं। मुझे काश्मीर में बहुत मजे आए।

रोहित गुप्ता
आयु ८½ वर्ष

हिमालय

हिमालय भारत का अविचल प्रहरी है। यह ससार का उच्चतम और सबसे चौड़ा पर्वत है। हिमालय शब्द का अर्थ है 'बर्फ का घर'। यहाँ सदा बर्फ ही बर्फ होती है।

हिमालय की लम्बाई डेढ़ हजार मील और चौड़ाई डेढ़ सौ मील है। हिमालय का ऊपरी भाग सदा हिम से ढका रहता है। नीचे बहुत घना जंगल है। यह घना जंगल अनेक प्रकार के वन्य-जन्तुओं से घिरा है। यहाँ तरह-तरह के फूल-पौधे और जड़ी-बूटियाँ मिलती है।

हिमालय का सबसे ऊँचा शिखर 'एवरेस्ट' है। यह संसार का सबसे ऊँचा शिखर है। हिमालय उत्तर भारत की नदियों का जन्म-दाता है। परम पावन गगा तथा ब्रह्मपुत्र, यमुना, सतलज जैसी नदियाँ हिमालय की गोदी से ही निकलती हैं। हिमालय की पिघलती बर्फ से ये नदियाँ सदानीरा रहती हैं।

हिमालय में अनेक स्वास्थ्यवर्धक और दर्शनीय स्थान हैं। काश्मीर, दार्जिलिंग, शिमला, रानीखेत, अल्मोडा आदि सुन्दर स्थानों का भ्रमण करने देश-विदेश से लोग जाते हैं। यहाँ प्रकृति के सुन्दर दृश्य देखने को मिलते हैं। यहाँ की वायु दूसरी जगह से अधिक निर्मल और स्फूर्तिदायक होती है। हिमालय में ऋषिकेश, बद्रीनाथ, केदारनाथ, अमरनाथ जैसे अनेक धार्मिक स्थान हैं।

हिमालय भारत का मुकुट है। ये भारत की उत्तरी शत्रुओं से रक्षा करता है। पर्वतों का सिरमौर, हमारा जीवन-दाता हिमालय, हमारा रक्षक है।

संजय लालके
आयु १० वर्ष

१८

चीन

चीन भारत का पड़ौसी देश है। चीन के निवासी चीनी या चाइनीज़ कहलाते हैं। भारत के साथ चीन का कई बार युद्ध हुआ है।

चीन की सारी जनता साम्यवादी है। चीन का प्रधान-मंत्री 'माऊ-से-तुंग' है। चीन के निवासी उनको भगवान की तरह मानते हैं।

चीन की एक प्रधान चीज़ उसकी एक दीवार है। यह उत्तर चीन से आरम्भ होकर दक्षिण चीन तक पहुँचती है।

चीन की जन-संख्या पृथ्वी पर सबसे अधिक है। वहाँ पर ७० करोड़ आदमी हैं। चीन बहुत बड़ा देश भी है।

सन् १९६६ में जापान ने चीन पर आक्रमण किया और चीन की बहुत सारी जमीन पर दखल कर लिया। पर दूसरे विश्व-युद्ध में जब जापान हार गया तब जापान को यह ज़मीन छोड़ देनी पड़ी।

युद्ध के बाद चीन के अन्दर बहुत अशान्ति थी। वहाँ हरदम साम्यवाद और नैश्नलिस्ट के विरुद्ध युद्ध होता था। अन्त में नैश्नलिस्ट हार गये। वे तब फारमोसा नामक द्वीप पर चले गये।

अब चीन का अच्छा समय है। चीन पृथ्वी के उच्चतम राष्ट्रों में से एक बन गया है। इसने बड़ी वैज्ञानिक उन्नति की।

इस समय चीन की हालत बहुत अच्छी है। वह अब जहाज, हवाई-जहाज आदि भी बनाने लगा है। इसकी सेना एशिया में सबसे सशक्त मानी जाती है।

ज्यादातर चीनी मंगोल जैसे लगते है। यह पीले रंग के होते है। इनकी आंखें छोटी और टेढ़ी होती हैं।

चीन हमारा पड़ौसी होकर भी हमारे साथ मित्रता का व्यवहार नहीं करता है। वह हमारे देश की भूमि छीनना चाहता है। किसी भी देश के लिए ये अच्छी बात नहीं है।

विनायक सेन
आयु ९ वर्ष

———

गाँव का जीवन

गाँव बहुत छोटा होता है। यहाँ किसान और गरीब रहते हैं। वहाँ लोग झोपड़ी में रहते हैं। वहाँ मोटर गाड़ी नहीं चलती है, केवल बैल गाड़ी चलती है। न वहाँ पर पक्की सड़कें है, न बिजली के खम्भे।

किसान का जीवन बड़े परिश्रम का जीवन है। किसान सुबह-सुबह उठकर खेत में हल चलाने जाते हैं। लोग उठकर अनाज खरीदने जाते हैं। दोपहर को गाँव की औरतें खेतों पर ही खाना पहुँचा देती है। किसान वहीं पर कुएँ के किनारे बैठकर खाना खाते हैं। केवल थोड़ी देर पेड़ की छाया में आराम करते हैं, फिर काम पर जुट जाते हैं।

गाँव में बिजली नहीं होती है। वहाँ रात में लालटेन या तेल के दीए जलाये जाते हैं। कभी-कभी रात में पास की नदी में मछियारे मछली पकड़ने जाते हैं।

गाँव में बच्चे सुबह उठकर पाठशाला जाते हैं। वे वापस आकर अपने माता-पिता के काम में हाथ बटाते हैं। खेत पर काम करते हैं; पशुओं को चराने ले जाते हैं।

शाम को चौपाल में अलाव जलाया जाता है। उसके चारों ओर लोग बैठकर इधर-उधर की बातें करते हैं।

सचमुच कितना सुन्दर और सरल जीवन है गाँव का।

सोमेन
आयु १० वर्ष

ग्रीष्म अवकाश के दिन

मैं छुट्टियों में अपने नगर संगरिया जाता हूँ। यह राजस्थान का एक नगर है। वहाँ मेरा घर है तथा एक बड़ा कृषि फार्म है। जब मैं घर

पहुँचा सब मुझे देख कर अति प्रसन्न हुए। मैं भी घर पहुँच कर बहुत आनन्दित था।

दूसरे दिन प्रातः ही मुझे अपने फार्म पर जाने की उत्सुकता थी। मैं अपने ट्रेक्टर पर बैठकर अपने फार्म की ओर चला।

प्रभात के उगते सूरज की किरणें खेतों पर पड़ रही थी। शीतल वायु चल रही थी। चारों ओर हरियाली छाई थी। खेतों में सरसों, कनक, चनें आदि के नन्हें-नन्हें बूटे उग रहे थे। कही कपास बोने की तैयारी हो रही थी। कहीं-कही ट्रेक्टर से खोदकर जमीन मुलायम बनाई जा रही थी। खेत जहाँ तैयार हो चुके थे, उनमें मशीन द्वारा बीज बोए जा रहे थे।

हमारे फार्म पर बहुत सी गाएँ-भैंसे भी है। इस कारण हमारे घर में दूध-दही की कभी कमी नही रहती है। हमारे यहाँ ऊँठ और बैल भी हैं। ऊँटों से भी कृषि का काम लेते हैं। हमारे यहाँ दो ट्यूब-वेल हैं। ट्यूब-वेल के आगे एक छोटी सी हौदी है उसमें मैं रोज नहाता हूँ।

कभी-कभी प्रातःकाल, मैं ऊँट की सवारी करने के लिए जाता हूँ तब सुन्दर सुन्दर चिडियें दिखाई देती हैं। बगुले पानी में चोंच डाल कर मछलियां पकड़ते हैं। मेंढक टर्र-टर्र करके शोर मचाते हैं। मोर अपने पँख फैलाकर नाचते है। गाय-भैंसे घास चरती होती है और खुशी के कारण अपनी पूँछ हिलाती रहती है। चारों ओर पौधे ओस से नहाए नज़र आते हैं।

जिस दिन मैं अपने फार्म पर सोता हूँ उस दिन आनन्द आ जाता है। रात को ठन्डी हवा चलती रहती हैं। रात को गीदड हुंआ हुंआ करते रहते हैं, झीगुर की झंकार गूँजती रहती है।

इसी प्रकार एक दिन छुट्टियाँ समाप्त हो गई। मुझे स्कूल लौटने की तैयारी करनी थी। किन्तु अपने फार्म पर बिताए हुए दिनों को याद करके मन भारी हो रहा था।

प्रदीप
आयु १० वर्ष